INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 6 | JULY – 2025

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्याथियों मे पर्यावरण सरंक्षण कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. तेजराम नायक
प्राचार्य
रायगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, रायगढ (छत्तीसगढ़)

सारांश —

पर्यावरण अभिवृत्ति एक व्यक्ति के बाह्य पर्यावरण में या फिर आंतरिक मूल्यो और उद्देश्यों में कुछ प्रबल कार्य में परिवर्तन आता है। जब उनके संदर्भ में प्राय: व्यक्ति को संबंधित अभिवृत्ति में आवश्यक व अनुकुल परिवर्तन शनै:—शनै:देखने में आता है। पर्यावरणीय अभिवृत्ति जिसमें छात्र में प्रकृति प्रेम और पारिस्थितिकीय घटना चक्र में संलग्न होकर पर्यावरणीय घटकों में लगाव उत्पन्न हो सके साथ ही वह पर्यावरण संरंक्षण संबंधि अभिवृत्ति एवं व्यवहार संबंधी अभिवृत्ति एवं व्यवहार के प्रति सजग हो सके। न केवल छात्र मे पर्यावरणीय समस्याओं के तात्कालिक व दूरगामी परिणामो संबंधी सोच उत्पन्न हो अपितु उसमें प्रदुषण के व्यक्तिगत तथा सामूहिक (घरेलू व औद्यौगिक) स्तरों का उनके पर्यावरण घटकों पर प्रभावों का विश्लेषण करने की समता का भी विकास हो सके। स्थानीय एवं विश्व स्तर पर तेजी से उभर रही अनेक पर्यावरणीय समस्याओं के कारण अध्ययन का महत्व दिनो—दिन बड़ता जा रहा है। उतना ही तेज गति से विनास हमारे ओर बढ़ रहा है। निरंतर घटते प्राकृतिक संसेधनो, ओजोन क्षरण, तेजाबी वर्षा, हरित गृह आदि पर्यावरणीय समस्याओं ने बीसवीं शताब्दी मे विश्व समुदाय की निद्रा भंग कर दी है। अत: जीवों के अस्तित्व को समाप्त कर नष्ट कर देने वाली उस विश्व स्थायी समस्या के प्रति आज युवकों छात्र—छात्राओं मे संवेदनशीलता बोधचेतना व अभिवृत्ति को विकसित करना, वर्तमान तथा भविष्य का विषय बन गया है। यह अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों मे मदद दे सकेगा— १. भविष्य मे योजना निर्माण मे। २. पर्यावरण शिक्षा के प्रति सकारात्मक व अनुकूल अभिवृत्ति के विकास मे । ३. वर्तमान मे भविष्य की प्रमुख पर्यावरण समस्या के विकास मे ।अत: इन समस्याओं की समाधान की दिशा मे हो रहे प्रयास मे यह अध्ययन भी कुछ सकारात्मक तथ्य प्रस्तुत कर सकता है।

प्रस्तावना—

शिक्षा बालक मे व्यवहार कौशल, अभिवृत्तियों का विकास कर उसे एक अच्छा नागरिक बनाती है। जहां एक ओर शिक्षा बालकों का सर्वांगिण विकास कर उन्हे विद्वान, चरित्रवान और बुद्धिवान बनति है वहीं दूसरी ओर यह समाज के विकास लिए भी एक आवश्यक एवं शक्तिशाली साधन है। यह आगे आने वाली पीढ़ी को उच्च आदर्शो, आकाक्षाओ, विश्वासों जैसे सांस्कृतिक संम्पत्ति को हस्तांतरित करती है। शिक्षा ही वह साधन है,जो मनुष्य को पशु से अलग करती है। शिक्षा मनुष्य के विचार मनन शक्ति, तर्क, चिंतन, सत्य असत्य का बोध कराता है। संपूर्ण ज्ञान रूप मे मन आचरण तथा चरित्र का निर्माण का नाम ही शिक्षा है। जिसमे नवीन से नवीनतम अनुभव प्रयुक्त होता है। सहृदय, सचरित्र, निर्भिक, सक्षम,

संयुक्त, सुसमृद्धि, प्रगतिशील और विवेकशील, मानव का निर्माण प्रक्रिया को ही आदर्श शिक्षा की संज्ञा दी जाती है।

पर्यावरण तथा शिक्षा से पहले यह स्पष्ट होता है कि दोनो मे विकास को महत्व दिया जाता है। पर्यावरण मे वातावरण की गुणवत्ता तथा शिक्षा मे व्यक्ति की की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जाती है। शिक्षा को विकास की प्रक्रिया कहते है। तथा पर्यावरण मे आन्तरिक तथा बाह्य संपूर्ण परिस्थितियों को सम्मिलीत किया जाता है। मनुष्य तथा अन्य जीवों की अभीवृद्धि तथा विकास को प्रभावित करती है। प्राणी का अपना पर्यावरण होता है। मनुष्य का वतावरण भौतिक,समाजिक, होता है। शिक्षा द्वारा इनकी गुणवत्ता के लिए परिवर्तन तथा सुधार किया जा सकता है। जिससे बालकों को आंतरिक व्यवहार मे परिवर्तन लाया जा सके। मनुष्य तथा बालकों के व्यवहार परिवर्तन मे वतावरण का विशेष महत्व है।

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य मे चिंतन , मनन, तार्किक, शक्ति एवं मानसिक विकास करता है। अर्थात व्यक्ति के किसी भी समस्या के प्रति सोंच सके व उसके बारे मे समाधान निकाल सके यह तभी संभव है जब व्यक्ति को अच्छा वातावरण मिलते है।अर्थात हमारे चारो तरफ पाये जाने वाले वातावरण को ही पर्यावरण कहते है।पर्यावरण से होने वाले प्रदुषण के प्रति व्यक्ति विचार करना, सोचना, समझना तथा चिंतन करना शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकता है। अर्थात पर्यावरण के प्रति दी जाने वाली शिक्षा को ही पर्यावरण शिक्षा कहते है।

पर्यावरण—

पर्यावरण का संदर्भ वह संपूर्ण परिस्थितियॉ है जिसमे व्यक्ति घिरा हुआ है, और उसकी दीनचर्या तथा कार्य प्रणाली को प्रभावित करते है। जिसके अंतर्गत दोनो प्रकार के जैविक अजैविक पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। प्रकृति जो कुछ हमारे चारो ओर परिलक्षित होता है वायु, जल, मृदा, पेड़, पौधे, प्राणी आदी सभी पर्यावरण के अंग है और इन्ही से पर्यावरण की रचना होती है।सभी प्रकार के जीव और भौतिक तत्व अपनी क्रियाओं से एक दूसरे को प्रभावित करतें है।

अत: पर्यावरण प्रकृति प्रदत्त के सभी पदार्थ जो नि:शुल्क रूप से मानव एवं जैव सम्प्रदाय के चारो ओर से घेरे हुए है तथा उनके बीच स्वतंत्र रूप से क्रिया प्रतिक्रिया संचालित करते हैं। एवं उसके जीवन को प्रभावित करते है पर्यावरण कहलाते है।

पर्यावरण शिक्षा—

पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से बालक को प्रारंभ से ही पर्यावरणीय घटको के प्रति सचेत किया जाय और युवा वर्ग मे सांचेतना जागृत कर उनकी अभिवृत्तियों मे परिवर्तन किया जाय, ताकि समय रहते पर्यावरण को सुरक्षित रखकर मानव अस्तित्व की रक्षा की जा सके।पर्यावरण शिक्षा अन्त: इस पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी जगत को उस पर आने वाले संभावित विपदाओं से तथा उन्हे सुखमय जीवन देने का प्रयास करना है। साथ ही उन्हे इस योग्य भी बनाना है वे आगे और हो सकने वाले समस्याओ को पूर्व मे ही जान सके और उसका इस प्रकार हल खोजे जिससे समस्या भी दूर हो जाये और नियमित जीवन प्रक्रिया मे कोई बाधा भी न आ सके। मनुष्य प्रकृति का सर्वोत्तम कृति है। मानव अपने अस्तित्व को कायम रखते हुए अपने वातावरण के साथ प्रभावी व उचित सामंजस्य बनाये रखता है। पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखना हमारी संस्कृति और सभ्यता के विकास हेतु ही नही बल्कि मानसिक व शारिरिक स्वास्थ के लिए भी अपरिहार्य है। पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य के अस्तित्व से उसीप्रकार जुड़ा है जिस प्रकार आर्थिक विकास का उन्नति से ।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भोगवादी संस्कृति को पैदा करने वाले और औ गिक विकास के वर्तमान ढाचे को त्याग कर एक ऐसी मूल्य परक जीवन शैली को अपनाने की जरूरत है जो संयम और सादगी पर आधारित हो जिसमे प्रकृति के साथ सहयोग और समरसता स्थापित किया जा सके।

पर्यावरण प्रदुषण—

प्रकृतिमें उपस्थित सभी प्रकार के जीवधारी अपनी वृद्धि विकास तथा सुव्यवस्थित एवं सुचारू रूप से जीवन चक्र चलाने के लिए संतुलित वातावरण पर निर्भर रहता है। पर्यावरण का एक निश्चित संगठन होता है तथा उसमें सभी प्रकार के जैविक एवं अजैविक पदार्थों का एक निश्चित अनुपात होता है। ऐसे वातावरण को सुव्यवस्थित वातावरण कहते है। कभी—कभी वातावरण में उसके घटकों का प्रक्रिया मात्र किसी कारण वश या तो कम हो जाता है अथवा घट जाता है अथवा पर्यावरण वातावरण में हानिकारक घटकों का प्रवेश हो जाता है। यह प्रदुषण मानव एवं जीवधारियों के लिए अत्यधिक हानिकारक होता है। पर्यावरण प्रदुषण कहलाता है।

पर्यावरण संरक्षण—

पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार सुरक्षा किसी देश के जनसंख्या विशेषज्ञ जिन्हें समान्यता अंग्रेजी के प्रचलित नाम डेमोग्राफर्स के नाम से जाना जाता है। उसे देश की घटती—बढ़ती जनसंख्या तथा देश में उपलब्ध विभिन्न संस्थानों संसाधनों स्थित लोंगों का रहन सहन और रिति रिवाज के आधार पर यह अधिकाधिक रूप से बताने मे सक्षम होते है कि अगले वर्षो मे इस देश की स्थिति होगी, कौन सी विपदाऐं या घटनाऐं आने वाली घटित होने वाली है और उनका देशवासियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? यह पर्यावरण सुरक्षा एवं सुघार द्वारा अंतराष्ट्रीय स्तर पर संरंक्षण कार्यक्रम किया जाता है। पर्यावरण सुरक्षा राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यक्रम भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, राष्ट्रीय प्राकृतिक संग्राहलय, जल प्रदुषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम, वायु अधिनियम, भारतीय वन अधिनियम, वन अधिनियम पशुओं के प्रति क्रुरता का निवारण, केन्द्रिय चिड़िया घर प्राधिकरण, सार्वजनिक लोन प्राप्त करना था जिससे देश मे पर्यावरण संरंक्षण सुधार सूरक्षा के लिए कोइ ठोस योजना तैयार की जा सके और देश के लिए भावी पर्यावरण राष्ट्रीय बनाकर पर्यावरण संरंक्षण को रोका जा सके।

पर्यावरण संरंक्षण के स्वयंसेवी संस्था का गठन किया गया प्रत्येक विकासशील देश की तरह हमारा देश भी आजादी के बाद से ही उन सभी समस्याओं और परिस्थिति से गुजर रहा है। जिससे राज्य सरकार ने सामान्य जन नागरिकों के लिए अनेक योजनाए बनाती है और अपनी साधन सीमा मे उनका क्रियान्वयन करती है। लेकिन प्राय: यह देखा जाता है कि व्यापक रूप से उनका लाभ लोंगों को मिल पाता ये सरकारों से तालमेल बिठाकर उनकी योजनाओं को आम जनता तक पहुचाती है। जनता की प्रतिक्रियाऍं, आकाक्षाऍं और उपेक्षाओं को सरकार के पास तक ले जाती है। इसतरह दोनो के बिच बहुत महत्वपूर्ण कड़ी होती है। ऐसी समस्याओं से होती है जो निजी तो है पर स्वयंसेवी से है जिसका ध्येय जनता के कष्ट को दूर करना तथा देश के विकाश मे सहायक होना होता है।

पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति—

अभिवृत्ति शिक्षा के क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण अनुलक्षण है, अभिवृत्ति के अध्ययन मे मनोविज्ञान ने अनुसन्धान मे प्राय: मुख्य स्थान प्राप्त किया है। किसी भी संयुक्त समाजिक व्यवहार का अध्ययन बिना अभिवृत्ति के ज्ञान के नही किया जा सकता है। समाज के बदलते परिवेश मे शिक्षको का कर्तव्य है कि वांछित कार्यों के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति का निर्माण करें। बालको में किसी विषय के प्रति रूचि तथा अरूचि का भाव उसमें अभिवृत्ति को प्रदर्शित करता है। बालकों में किसी विषय के प्रति रूचि तथा अरूचि का भाव उसमें अभिवृत्ति को प्रदर्शित करता है। बालकों के रूचि तथा पर्यावरणीय कारको से तो उसको व्यवहार उन कारकों के कारण प्रभवित होता है।यदि पर्यावरण के प्रभाव से बालक धनात्मक अभिरूचि को जागृत करता है तो वह एक संतुलित व्यवहार कुशल मस्तिष्क वाला हो सकता है। इसका प्रभाव उसकी शिक्षा व शैक्षिक उपलब्धि पर पडता है।

पर्यावरण अभिवृत्ति एक व्यक्ति के बाह्य पर्यावरण में या फिर आंतरिक मूल्यो और उद्देश्यों में कुछ प्रबल कार्य में परिवर्तन आता है। जब उनके संदर्भ में प्राय: व्यक्ति को संबंधित अभिवृत्ति में आवश्यक व अनुकुल परिवर्तन शनै:—शनै:देखने में आता है। पर्यावरणीय अभिवृत्ति जिसमें छात्र में प्रकृति प्रेम और पारिस्थितिकीय घटना चक्र में संलग्न होकर पर्यावरणीय घटकों में लगाव उत्पन्न हो सके

साथ ही वह पर्यावरण संरंक्षण संबंधि अभिवृत्ति एवं व्यवहार संबंधी अभिवृत्ति एवं व्यवहार के प्रति सजग हो सके। न केवल छात्र मे पर्यावरणीय समस्याओं के तात्कालिक व दूरगामी परिणामो संबंधी सोच उत्पन्न हो अपितु उसमें प्रदुषण के व्यक्तिगत तथा सामूहिक (घरेलू व औद्यौगिक) स्तरों का उनके पर्यावरण घटकों पर प्रभावों का विश्लेषण करने की समता का भी विकास हो सके।

संबंधित शोध

पटेल एवं गुप्ता (२०२२) स्वच्छ भारत मिशन में जनजागरूकता अभियान का प्रभाव —एक अध्ययन का सारांश में बताया कि भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गांधी जी की जयंती ०२ अक्टूबर २०१४ को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की, स्वच्छ भारत अभियान को भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। महात्मा गांधी जी की जयंती के अवसर पर माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी महात्मा गांधी जी की १४५ वी जयंती के अवसर पर इस अभियान की शुरुआत की २ अक्टूबर २०१४ को उन्होंने राजपथ पर जनसमूहों को संबोधित करते हुए राष्ट्रवादीओं से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा साफ—सफाई के संदर्भ में यह सबसे बड़ा अभियान है। साफ—सफाई को लेकर भारत की छवि को बदलने के लिए श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश को एक मुहिम से जोड़ने के लिए जन आंदोलन बनाकर इसकी शुरुआत की।

चोपड़ा, एट अल (२०१२) ने अपनी रिपोर्ट ''भारत के हरित ग्रामीण विकास'' में कई सामाजिक कल्याण और ग्रामीण विकास योजनाओं पर चर्चा की। निर्मल भारत अभियान — पूर्व में पूर्ण स्वच्छता अभियान (टीएससी) — ने हाल ही में ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में शौच के उन्मूलन से लेकर व्यापक स्वच्छता तक अपने दायरे का विस्तार किया है। परियोजना निधि का दस प्रतिशत ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए निर्धारित किया गया है। एनबीए ठोस और तरल कचरे का सुरक्षित निपटान सुनिश्चित कर सकता है, और अनुपचारित अपशिष्ट जल को जल प्रणाली में फिर से प्रवेश करने से रोक सकता है। इन परिणामों से पानी की गुणवत्ता में काफी सुधार हो सकता है।

काशिया और गंगवार (२०१९) स्वच्छता कार्यक्रम और उसके अभियान के प्रभाव पर एक अध्ययनरू स्वच्छ भारत अभियान के विशेष संदर्भ में बताया कि स्वच्छता अधिकांश बीमारियों की जड़ है। बढ़ती जनसंख्या, रोजगार और बेहतर शिक्षा की तलाश के कारण शहरी मलिन बस्तियाँ विकसित हो रही हैं। ये मलिन बस्तियाँ अवैध हैं, इसलिए इन्हें सरकार द्वारा दी जाने वाली अन्य सुविधाओं का लाभ नहीं मिल रहा है। ग्रामीण और शहरी मलिन बस्तियों के लोग खराब स्वच्छता से सबसे ज़्यादा प्रभावित हैं। कम प्रति व्यक्ति आय वाले देश भी स्वच्छता के मामले में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जो वाकई चिंता का विषय है। स्वच्छता शब्द का जिक्र आते ही लोग इसे खुले में शौच से जोड़ देते हैं। इसकी वजह यह है कि स्वच्छता अभियान शुरू होने के बाद, मुख्य ध्यान देश से खुले में शौच को खत्म करने पर था। मीडिया ने भी कई विज्ञापन दिखाए हैं जो लोगों के मन में विरोध पैदा करते हैं। मशहूर हस्तियाँ भी लोगों को इस अभियान की ओर आकर्षित करती हैं। सरकार ने खुले में शौच से संबंधित कई विज्ञापन जारी किए हैं। इस संदर्भ में 'जहाँ सोच, वहाँ शौचालय' टैगलाइन काफी मशहूर है। स्वच्छता के अन्य पहलू जैसे सुरक्षित पेयजल, स्थायी स्वच्छता के लिए तकनीकों को बढ़ावा देना, हाथ से मैला ढोना और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर खुले में शौच के समान चर्चा नहीं की जाती। बहुत कम लोग हैं जो जुड़वां गड्ढे और इसके लाभों के बारे में जानते हैं। मैनुअल स्कैवेंजिंग अभी भी प्रचलित है। स्वच्छता अभियान की सफलता में स्वच्छाग्रहियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी भूमिका लोगों को शौचालय बनाने और उनका उपयोग करने के लिए राजी करने से शुरू होती है। शौचालय बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उचित उपयोग चिंता का विषय है। लोग सोचते हैं कि महिलाओं के लिए शौचालय आवश्यक है। पुरुष बिना शर्म के खुले में पेशाब करते थे, वे इसमें बहादुरी पाते थे। इसलिए लोगों को यह बताना कि शौचालय केवल महिलाओं के लिए ही नहीं, सभी के लिए महत्वपूर्ण है, यह एक बड़ा काम है। धन आवंटन, भ्रष्टाचार और खराब तरीके से निर्मित शौचालय लक्ष्य हासिल करने में बाधा डालते हैं। एक गलत धारणा है कि सब्सिडी वाले गड्ढे जल्दी भर जाएंगे, इसलिए परिवार के पुरुष शौचालय का उपयोग नहीं करते हैं।

केवल महिलाएं और बीमार व्यक्ति ही इनका उपयोग करते हैं। संस्कृति भी कारकों में से एक है। कुछ संस्कृतियों में, शौचालय को बहुत अपवित्र माना जाता है, इसलिए इसे घर के बाहर होना चाहिए सरकार को अपशिष्ट पुनर्चक्रण गतिविधियों के माध्यम से अधिक रोजगार सृजन करना चाहिए। शौचालय निर्माण के लिए अनुदान राशि स्वीकृत होने से लेकर उसके उपयोग में आने तक, प्रत्येक चरण पर उचित जाँच होनी चाहिए। सुरक्षित पेयजल की भी व्यवस्था होनी चाहिए। सुरक्षित पेयजल के बारे में जागरूकता फैलाई जानी चाहिए ताकि लोग अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा सकें। जागरूकता विभिन्न माध्यमों से ही संभव होगी, और इसकी अत्यधिक प्रभावशीलता के कारण सहभागी दृष्टिकोण का उपयोग किया जाना चाहिए।

सिंह नीलम एवं सुरेश कुमार (२०१८) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्वच्छता कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का अध्ययनस्वच्छता का सम्बन्ध शिक्षा से है। इस बदलते समय में शिक्षा सर्वोपरि है। स्कूलों में शौचालय न होने का असर बच्चों विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा पर पड़ता है। हमारे देश में शौचालय विहीन स्कूलों की बहुत ही बड़ी समस्या खड़ी हो रही है। देश में लगभग २ लाख से अधिक स्कूलों में शौचालय का निर्माण नहीं हो पाया है। जिसके कारण बच्चे स्कूल छोड़ने के लिए विवश हो रहे हैं। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि छात्र एवं छात्राओं में स्वच्छता कार्यक्रमों के प्रति अन्तर है यह अन्तर का कारण छात्राओं द्वारा घरेलू कार्यों में अधिक संलग्नता होना तथा घर की साफ–सफाई में अधिक रूचि लेना आदि हो सकता है।

आई.सी.एम.आर. (२०१२) ने अध्यन में बताया कि – स्वास्थ्य पर पर्यावरण का एक प्रमुख प्रभाव पड़ता है और पर्यावरणीय स्वास्थ्य में निवेश करना एक उत्तम निवेश है। त्वरित शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, भूमण्डलीकरण और आबादी में वृद्धि जैसी स्थितियाँ पर्यावरण पर और दबाव डालती हैं। यदि सभी क्षेत्रों द्वारा तत्काल कार्यवाही नही की गई तो समस्या और गम्भीर हो सकती है जिसका मानव स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है। **पाण्डेय, प्रज्ञा एवं यादव, गरिमा (२०१५)** अप क` अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित होता है कि कि भारत विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है, जहाँ लगभग ३१.२ प्रतिशत जनसंख्या शहरों व कस्बों में निवास कर रही है। औद्योगीकरण व निजीकरण के फलस्वरूप ग्रामीण जनता आजीविका हेतु शहरों की ओर पलायन कर रही है। यह अनियंत्रित पलायन स्वच्छता, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाओं के लिए एक चुनौती के रूप में सामने खड़ी है। सरकार द्वारा भी इन क्षेत्रों में स्वच्छता व स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनायें चलायी जा रही है, जिसके माध्यम से बीमारियों को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है परन्तु इसके बाद भी विभिन्न चुनौतियाँ आज हमारे सामने एक समस्या बन कर खड़ी है, जो इनके सफल होने में रूकावट डाल रही ह

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा २००५ में कहा गया है– ''स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा को अन्य विषयों के समान दर्जा दिए जाने की जरूरत है। इस क्षेत्र में शिक्षक की तैयारी योजनाबद्ध हो और संयुक्त प्रयास किए जाएँ। इसके विषय क्षेत्रों, जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और योग आते हैं।

शेटये प्रतिभा (१९९६–९७) माध्यमिक स्तर ९ वीं पर अध्यनरत विद्यार्थी की पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर उनका शैक्षणिक उपलब्धि तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। निष्कर्ष – में बताया कि शहरी विद्यालय की छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति मे निम्न स्तरीय धनात्मक संबंध है।

समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मे पर्यावरण सरंक्षण कार्यक्रम के प्रति पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन ,,

समस्या का उद्देश्य

१. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं मे पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम संबंधी जानकारी का अध्ययन करना।

२. शासकीय एवं अशसकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं में पर्यावरण सरंक्षण कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
३. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
४. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

१. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरण सरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
२. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
३. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमाएं

प्रस्तुत शोध मे रायगढ़ जिला के माध्यमिक शालाओं के कक्षा ९ वीं के छात्र व छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया है।

१. प्रस्तुत शोध मे पॉच शासकीय विद्यालय एवं पॉच अशासकीय विद्यालय का चयन किया गया है।
२. प्रस्तुत शोध मे रायगढ़ जिला के ९ वीं कक्षा से शासकीय एवं अशासकीय स्कुल से ५० छात्र एवं ५० छात्राएं का चयन किया गया है।

क्र	विद्यालय का नाम			
	शासकीय		अशासकीय	
१	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
२	५०	५०	५०	५०

शोध विधि— प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त चर—

१. स्वतंत्र चर— प्रस्तुत शोध प्रबंध मे स्वतंत्र चर — 'शासकीय शाला और अशासकीय शाला के छात्र—छात्रायें को लिया गया है।
२. आश्रित चर — प्रस्तुत शोध मे आश्रित चर विद्यार्थियों में पर्यावरण अभिवृत्ति को लिया गया है।

अनुसंधान का उपकरण— पर्यावरणीय अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए लिंकर्ट के पंचस्तरीय मापनी पर निर्मित ''पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी'' जिसे डॉ. सरला पांडे के निर्देशन में अनुराग मिश्रा (१९९९) द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत मापनी का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष—

परिकल्पना— १ शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

डाटा टेबल—शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति **के प्रति प्राप्तांको का सारणीयन व विश्लेषण**

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	C.R.	Df
शासकीय	५०	२१६.६	३४.७६	९.८१	९८
अशासकीय	५०	२०५.८	२६.७७		

व्याख्या—'शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति के परीक्षण का माध्य क्रमश: २१६.६ व २०५.८ है एवं प्रमाप विचलन ३४.७६ व २६.७७ है। सार्थकता देखने के लिये C.R. की गणना की गई, जिसका मान ९.८१ प्राप्त हुआ ९८ df पर तालिका से ०.०१ स्तर पर सारणी मुल्य २.६३ होता है ०.०५ स्तर पर सारणी मुल्य २.९८ होता है जो प्राप्त गणना मुल्य से बहुत कम है। इसके आधार पर निष्कर्ष के रूप मे '' शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा। '' अत: हमारी परिकल्पना सिद्ध हुई।

परिकल्पना— २ शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

डाटा टेबल— शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति **के प्रति प्राप्तांको का सारणीयन व विश्लेषण**

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मुल्य	Df
शासकीय	२५	२१०.४८	३५.४०	०.७०	४८
अशासकीय	२५	२०८.७२	२४.५२		

व्याख्या:— शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रतिअभिवृत्ति के परीक्षण का माध्य क्रमश: २१०.४८ व २०८.७२ है एवं प्रमाप विचलन ३५.४० व २४.५१ है । सार्थकता देखने के लिये T. मुल्य की गणना की गई, जिसका मान ०.७० प्राप्त हुआ ४८ df पर तालिका से ०.०१ स्तर पर सारणी मुल्य २.६८ होता है ०.०५ स्तर पर सारणी मुल्य २.०१ होता है जो प्राप्त गणना मुल्य से बहुत कम है। इसके आधार पर निष्कर्ष के रूप मे ''शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरण सरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा। '' अत: हमारी परिकल्पना अपुष्ट हुई।

संभावित कारण—'शासकीय एवं अशासकीय शाला चूकि प्राइवेट संस्था द्वारा चलाया जाता है एवं फीस की अधिकता के साथ ही पढाई की गुणवत्ता एवं शिक्षक की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाता है अत: जहां पढाई का स्तर उच्च हो व शिक्षक उच्च शिक्षित हो वहां पढाई का स्तर भी उचा हो जाता है ऐसे मे छात्रों एवं छात्राओं मे ज्ञान का समान रूप से विस्तार होता है और उनकी वातावरणीय व बौद्धिक क्षमता समान स्तर पर अधिकांशत: पायी जाती है।

परिकल्पना— ३.शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में पर्यावरण सरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

डाटा टेबल— शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में पर्यावरण सरक्षण के प्रति अभिवृत्ति**के प्रति प्राप्तांको का सारणीयन व विश्लेषण**

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मुल्य	Df
शासकीय	२५	२२२.७२	३३.००	७.८७	४८
अशासकीय	२५	२०२.८८	९०.३३		

व्याख्या:—शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में पर्यावरण सरक्षण के प्रति अभिवृत्ति के परीक्षण का माध्य क्रमश: २२२.७२ व २०२.८८ है एवं प्रमाप विचलन ३३.०० व ९०. ३३ है । सार्थकता देखने के लिये T. मुल्य की गणना की गई, जिसका मान ७.८७ प्राप्त हुआ ४८ df पर तालिका से ०.०१ स्तर पर सारणी मुल्य २.६८ होता है ०.०५ स्तर पर सारणी मुल्य २.०१ होता है जो प्राप्त गणना मुल्य से बहुत कम है। इसके आधार पर निष्कर्ष के रूप मे ''शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में पर्यावरण सरक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।'' अत: हमारी परिकल्पना सिद्ध हुई।

४.५ निष्कर्ष:—

समस्या कथन के आधार पर निर्मित परिकल्पनाओं में से हमारी २ परिकल्पना पुष्ट हुई, और १ परिकल्पना अपुष्ट हुई।

सुझाव:—

१. शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के प्रति रूचि जागृत करें।
२. पर्यावरण की गुणवत्ता के लिये शिक्षकों को विषय का ज्ञान होना चाहिए ।
३. किसी भी समस्या समाधान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अपना महत्व है अत: यह आवश्यक है कि बच्चों के समक्ष ऐसी परिस्थिति पैदा की जाए जिससे उसके वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके ।
४. शासन को अशासकीय व शासकीय के विद्यालयों में भी प्राथमिक या उच्च प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अभिवृत्ति का शिक्षण प्रारंभ कराने चाहिए ।
५. जिन विद्यालयों में पर्यावरण के लिए भावनाएं पर्याप्त नही है वहां सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए एवं वैसा वातावरण निर्माण किया जाए।
६. प्रत्येक शिक्षा संस्था मे समाजिक और समुदायिक सेवा के विकास के लिए पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के कार्यक्रम किया जाना चाहिए।
७. पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के लिए एन.सी.सी. एवं एन. एस. एस. का कार्यक्रम प्रत्येक शिक्षा संस्थानो मे रखा जाना चाहिए।
८. भारत देश में पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के लिए देश की सभी भाषाओं को विद्यालय और उच्च—शिक्षा का माध्यम बनाया जाना चाहिए।

९. पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के चेतना के विकास को विद्यालय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बनाया जाना चाहिए।
१०. पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के लिए जाति,धर्म,वर्ग,स्थिति और लिंग का भेद भाव किये बिना सब बच्चों को शिक्षा के समान अवसर दिया जाना चाहिए।
११. पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के लिए सभी शिक्षा स्थानों स्नेह सम्मेलनों क्रीडा गतिविधियों तथा सांस्कृति कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए छात्र—छात्राओं को प्रेरित किया जाना चाहिए।
१२. शिक्षा संस्थानों के अलावा समाजिक संस्थाओं के द्वारा गोष्टियों हस्त चित्र,नाटक,प्रश्नोत्तर आदि का आयोजन कर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्तिका कार्यक्रम किया जाना चाहिए।
१३. पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों में छात्र—छात्राओं को क्रियान्वयन,रूचि,योगदान एवं सहमतियों के लिए प्रेरित करना चाहिए।
१४. पर्यावरण जागरूकता व अभिवृत्ति के लिए समाज सेवी संस्थानों के द्वारा प्रत्येक नागरिकों प्रेरित करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. कपिल एच.के., २००४, अनुसंधान विधियां (व्यावहारिक विज्ञानों में), एच.पी.भार्गव बुक हाऊस, भार्गव भवन, ४/२३० कचहरी घाट, आगरा पृ०क्र०—५१, ७४,।
२. राय पारस नाथ, १९९९, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ.क्रं.—१२३, २३६,।
३. चौधरी सी.एन., १९९८, अनुसंधान की प्रविधियां, सब लाइन पब्लिकेशन, जयपुर, पृ.सं.२६,।
४. त्रिवेदी आर.एन एवं डी.पी.शुक्ल २०००, रिसर्च मेथडोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो ८३, त्रिपोलिया बाजार जयपुर, पृ.क्र.१,०४—१०५, १७८, ४०६,।
५. शर्मा आर.ए. २००७, शिक्षा अनुसंधान, पर्यावरण शिक्षा लाल बुक डिपो निकटगवर्नमेंट कॉलेज, मेरठ पृ.क्रं.१९—२७, १२४, १६१—१६५,।
६. मंगल अंशु, कृष्ण दुबे, २००७, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मंदिर आगरा, पृ.क्रं. १४९—१५०।
७. अग्रवाल जे.सी.२०००, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, ४/१९ आसफ अली रोड, नई दिल्ली, पृ.क्रं. ४६।
८. श्रीवास्तव डी.एन., रंजीत सिंह एवं जगदीश पाण्डेय, २००४ आधुनिक समाज मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, भार्गव भवन ४/२३० कचहरी घाट, आगरा, पृ. क्रमांक १७६—१७८, १८०।
९. चौबे सरयू प्रसाद, २००२, आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान के मूल तत्व, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, I/१५.१६कमर्शियल ब्लाक, मोहन गार्डन दिल्ली पृ.क्रं. —१२३—१२४।
१०. पाठक पी.डी., २००७ शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृ.क्रं.२१२।
११. सिंह अरूण कुमार, २००५, समाज मनोविज्ञान की रूप रेखा, मोती लाल बनारसी, बंग्लो रोड, दिल्ली पृ.क्रं. १३५—१३९।
१२. त्रिपाठी लाल बचन, २००३, आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, एच.पी.भार्गव बुक हाउस, भार्गव भवन ४/२८० कचहरी घाट आगरा, पृ.क्रं. १८३—१८५।
१४. भार्गव महेश, २००७, आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एव मापन, एच.पी.भार्गव बुक हाउस, ४/२३० कचहरी घाट आगरा पृ.क्रं.—२६३—२६५।
१६. गुप्ता एस.पी., २००५, सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृ.क्र.—७२—७३, १११—११४, १३१—१३४।
१७. राय प्रज्ञा, २००६—०७, कामकाजी माता तथा घरेलू माता के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

१८. डेनियल अनिला, १९९६—९८. २ स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के भूगोल विषय के अध्ययन की व्याख्यान विधि एवं समस्या समाधान विधि द्वारा शिक्षण से उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
१९. साहू सुरेश कुमार, १९९७—९८, शिक्षाकर्मी एवं नियमित शिक्षक शिक्षिकाओं के मध्य शालेय वातावरण पर एक तुलनात्मक अध्ययन ।
२०. गोयल एम.के.२००७ — पर्यावरण शिक्षा अपना पर्यावरण पृष्ठ.१—१३ अग्रवाल पब्लीकेशन आगरा।
२१. सिंह डॉ.मंजू २००७ — पर्यावरण प्रबंधन पृ. २—८ डिस्कवरी पब्लीसिग हाउस नई दिल्ली।
२२. शर्मा बी.एल. माहेश्वरी वी. के. — पर्यावरण एवं मानव मुल्यों की शिक्षा।
२३. सक्सेना एन.आर. स्वरूप २०१० शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आर.लाल.बुक डिपो,मेरठ।
24- **पटेल विवके कुमार एवं गुप्ता अंशुल (२०२२)** स्वच्छ भारत मिशन में जनजागरूकता अभियान का प्रभाव —एक अध्ययन. *International Journal of Reviews and Research in Social Sciences. 2022; 10(1):49-5.*
२५. काशिया पी.एस., गंगवार आर. (२०१९) स्वच्छता कार्यक्रम और उसके अभियान के प्रभाव पर एक अध्ययनरू स्वच्छ भारत अभियान के विशेष संदर्भ में। ग्लोबल मीडिया जर्नल २०१९, १७:३३।
26- सिंह नीलम एवं सुरेश कुमार (२०१८) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं में स्वच्छता कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का अध्ययन IJSRST196595 | January-February-2018 [(4) 2 1924-1933